मोहम्मद तुगलक के अधीन राज्य नीतियों एवं प्रशासनिक सिद्धान्तों की नवीन स्थिति (दूसरा दिन)

मोहम्मद तुगलक सुल्तान के ~~दैविय~~ दैवीय सिद्धान्त का समर्थक था। उसने अपने सिक्कों पर "अल सुल्तान जिल्ली अल्लाह" खुदवाया। अपने सिक्कों से उसने अपनी जनता पर प्रभाव डालने का प्रयास किया। कुछ सिक्कों पर उसने कुछ इस तरह लिखवाया- "Sovereignty is not conferred upon every man, but is placed on elect. who obeys the sultan truly obey's God" "God is the supporter of the Sultan" उसने अपने सिक्कों से खलीफा का नाम हटा दिया,

जब सुल्तान ने पाया कि अच्छी शासन-व्यवस्था और अच्छा प्रशासन देने के बावजूद उसकी प्रजा उसे नापसन्द करती है, तो उसने ~~अपने शासन के~~ सोचा कि उसकी बढ़ती हुई बदनामी का कारण मुसलमानों का असन्तोष है तो उसने अपने शासन के अन्तिम दिनों में अपनी नीतियों में परिवर्तन किया और अब उसकी नीतियाँ खलीफा के पक्ष में हो गई। उसने मिश्र के खलीफा से माँग की, कि वह उसे —

P.T.O.

के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। और जब कभी उसने पाया कि उलेमाओं ने गलत निर्णय दिया है तो उसने उनके फैसले को निरस्त करते हुए अपना निर्णय दिया। इसके अतिरिक्त उसने कुछ ऐसे नवीन पदों का भी सृजन किया। जिन पर उसने गैर उलेमाओं को नियुक्त किया। जब कभी उसने देखा कि उलेमा विद्रोही हो रहे हैं तो उसने उनको आर्थिक सहायता देनी बन्द कर दी और उन्हें दण्डित भी किया। मोहम्मद तुगलक का कानून शेख और सैयदों को भी नहीं बख्शता था। इस नीति का परिणाम यह हुआ कि राजनीतिक और प्रशासन से उलेमाओं का प्रभाव लगभग न के बराबर हो गया। इस कारण धार्मिक नेताओं ने मोहम्मद तुगलक की काफी आलोचना की।